International Journal of Advanced Education and Research
www.alleducationjournal.com
ISSN: 2455-5746
Received: 13-08-2021, Accepted: 28-08-2021, Published: 14-09-2021
Volume 6, Issue 5, 2021, Page No. 8-9

समाज में दृष्टि और मूल्य

Akhilesh Singh bhadoriya[1], Ritu Singh Parihar[2]
[1] MP, Bhoj Mukt Visvyvidyalay, Bhopal, Madhya Pradesh, India
[2] B.Ed, Guest Faculty, APSU Rewa, Madhya Pardesh, India

सारांश
भारत की नही अपितु सभी देशों में नैतिक मूल्य गिरे है। हॉ, भारत को हम सुपर नैतिक मानते हैं इसलिए यहाँ गिरावट ज्यादा महसूस होती है। आज देश के विकास में बाधक मुख्य तत्व भ्रष्टाचार, नशाखोरी, अपहरण, बलात्कार, हत्या आदि है। नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अभाव नैतिक मूल्यों में गिरावट का पहला कारण है। जागरूकता का अभाव ज्ञान के अभाव के कारण है। आज ज्ञान के लिए दृष्टि का ठीक होना आवश्यक है। अर्थात् उत्तम दृष्टि ही नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता के करीब हमें ला सकती है। उत्तम दृष्टि क्या हैं ''मनसा'', ''वाचा'', ''कर्मणा'' का उत्तम ज्ञान। कर्म के अन्तर्गत हिंसा–अहिंसा, चोर–अचोरी, व्यभिचार–अव्यभिचार, भ्रष्टाचार–अभ्रष्टाचार आदि प्रत्ययों का उत्त्म ज्ञान उच्च नैतिकता के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार वचन के अन्तर्गत मिथ्या भाषण–अमिथ्या भाषण, चुगली अचुगली, चापलूसी–अचापलूसी, कटु भाषण, मृदु भाषण आदि कें अंतर की जागरूकता तथा मनसा कें अन्तर्गत लोभ–अलोभ, झूठीधारणा, सत्य धारणा आदि में भेद की जागरूकता के बाद राग, द्वेष एवं हिसा रहित आदर्श कर्मो के प्रति संकल्प, असत्य के स्थान पर सत्य बोलने का संकल्प तथा अविवेकशील बातों के स्थान पर विवेकशील बातों का संकल्प और अशुद्ध जीविका के स्थान पर शुद्ध जीविका को स्थान देकर प्रयत्न, अर्थात् इन्द्रियों पर संयम और संयम के उपरान्त स्मृति अर्थात् अच्छे–बुरे कर्म के परिणाम से स्मृति के साथ कार्य निष्पादन। इसके उपरान्त ही मनुष्य की चित्त की एकाग्रता अर्थात् समाधि की कल्पना कर सकता है जिससे नैतिक मूल्यों का सफर पूरा कर नैतिक मूल्यों के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

मूलशब्दः नैतिक मूल्य, नैतिकता, समाज, शिक्षक

प्रस्तावना
भारत ने सहस्त्र वर्षो तक न केवल विश्व का सांस्कृतिक नेतृत्व किया बल्कि उद्योग कला, कौशल और ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी भी रहा है।

प्राचीन भारत में ऋषियों ने गणित और विज्ञान की नीव रखी। अंतरिक्ष को भी नापा भारतीय ऋषियों ने पदार्थ की रचना का विश्लेषण किया और आत्मतत्व के स्वरूप का साक्षात्कार भी किया। उन्होने तर्क, व्याकरण, खगोलशास्त्र, दर्शन, तत्व ज्ञान औषधि विज्ञान शरीर रचना विज्ञान और गणित जैसे विषयों का भारत को महारथी कहलाने का सौभाग्य दिलाया। भारतीयों की नैतिकता के सम्बन्ध में मैगस्थनीज ने लिखा है ''किसी भारतीय को झूठ बोलने का अपराध मत लगाओं सत्यवादिता तथा सदाचार उनकी दृष्टि में बहुत ही मूल्यवान वस्तुऍ है।'' इस प्रकार भारत की नैतिकता भारतीयों के लिए सबसे मूल्यवान वस्तु है जिसके द्वारा भारत ने अपनी शिक्षा पद्धति को मजबूत किया है। भारतीय शिक्षा उपनिषद काल में भी बहुत सुदृढ थी। डा. अल्तेकर के अनुसार उपनिषद काल में भारत में साक्षरता का प्रतिशत 80 था। उपनिषद काल के एक राजा का कथन है कि ''मेरे राज्य में कोई भी निरक्षर नही है।'' यह कथन निराधार नही है। विश्व का पहला विश्वविद्यालय तक्षशिला भारत में था। इसके अतिरिक्त नांलदा, बल्लभी, विक्रम शिला, ओदन्तपुरी, मिथिला, नदिया और काशी आदि ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय भारत मे ही थे। उस समय भारत में नैतिकता अपने चर्मोत्कर्ष पर थी। मैकाले की भारत के प्रति कुटिलनीति ने भारतीय शिक्षा पद्धति पर प्रहार कर भारतीयों के चरित्र को बदला, नैतिकता पर कुठाराघात किया, पश्चिमी सभ्यता की ओर उन्हे आकृष्ट किया और इस कारण से भारत में बहुत बडी मात्रा में ॲग्रेज मानस पुत्रों का निर्माण हुआ और भारतीय शिक्षा की अवनति हुई। और अब हमें सतर्क होने की आवश्यकता है और वर्तमान शिक्षा में व्याप्त समस्या का समाधान पुरातन शिक्षा मे तलाशने की आवश्यकता है।

उद्देश्य
नैतिक मूल्यों के लक्ष्य को प्राप्त करने विषयक अध्ययन करना।

परिकल्पनाऍ
परिकल्पनाऍ निम्नलिखित है–

1. नैतिक मूल्यों में गिरावट का कारण नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अभाव है।
2. नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अभाव ज्ञान के अभाव के कारण है।
3. ज्ञान प्राप्ति के लिए दृष्टि का ठीक होना आवश्यक है।
4. उत्तम दृष्टि ही नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता ला सकती है।
5. नैतिक मूल्यों की जागरूकता के उपरान्त ही चित्त की एकाग्रता सम्भव है।
6. चित्त की एकाग्रता से ही नैतिक मूल्यों के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है।

शोध प्रविधि
परिकल्पना पर आधारित उपकरण (प्रश्नावली) का निर्माण रीवा जिले की समाज की सबसे प्रबुद्ध इकाई अर्थात् 100 प्राथमिक शिक्षक, 100 माध्यमिक शिक्षक, 100 उच्चतर माध्यमिक शिक्षक, 50 महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के सहायक प्राध्यापकों एसोशिएट प्राध्यापकों एवं प्राध्यापकों पर प्रशासित किये गये हैं। अर्थात् आकडो का संग्रहण सर्वेक्षण विधि द्वारा किया है। कुल 326 प्रश्नावली वापस प्राप्त हुई हैं। उपकरणों से प्राप्त आकडों का काई–वर्ग परीक्षण द्वारा सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है।

और सभी 06 परिकल्पनाए 0.01 विश्वास स्तर पर स्वीकृत होती है तथा किसी परिकल्पना में शून्य परिकल्पना का कोई अस्तित्व नही है। सभी परिकल्पनाएँ अपने उसी रूप में 0.01 विश्वास स्तर पर स्वीकृत हुई है।

निष्कर्ष

अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि नैतिक मूल्यों में गिरावट का कारण नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अभाव है और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता का अभाव ज्ञान के अभाव के कारण है और ज्ञान के आभाव का कारण दृष्टि का ठीक न होना है। निष्कर्ष में यह भी स्पष्ट हुआ है कि नैतिक मूल्यों की जागरूकता के उपरान्त ही चित्त की एकाग्रता सम्भव है। तथा चित्त की एकाग्रता से ही नैतिक मूल्यों के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है और यदि इस लक्ष्य को प्राप्त कर लिया जाय तो भारतीय शिक्षा में व्याप्त सारी समस्याओं का समाधान मिल जाए तो भारतीय शिक्षा में व्याप्त सारी समस्या मिल जायेगा।

सुझाव

नैतिक मूल्यों के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये बच्चों को नैतिक मूल्यों की जागरूकता का प्रशिक्षण, मनसा, वाचा, कर्मणा के उत्तम ज्ञान का प्रशिक्षण, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, अपहरण, बलात्कार उन्मूलन की दिशा में शासन द्वारा उचित कदम उठाने की आवश्यकता है। इस भयानक कृत्यों के परिणाम से अवगत कराने तथा ऐसी कुप्रथाओ के प्रभाव से मुक्त होने संबधी प्रशिक्षण की आवश्यकता है। चूँकि ज्ञान के अभाव में नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता नहीं लाई जा सकती अतः समाज द्वारा बच्चों को ज्ञान की प्राप्ति, ज्ञान का धारण एवं ज्ञान के प्रसारण संम्बधी प्रशिक्षण की व्यवस्था की जानी चाहिए। ज्ञान का तात्पर्य मनसा बाचा एवं कर्मणा के ज्ञान से हैं बच्चों के मन, वचन एवं कर्म के शोधन के कारखानों के रूप में प्रशिक्षण संस्थानों को कार्य करने की आवश्यकता हैं। समाज और राष्ट्र को यह सुझाव है कि बच्चों को शैक्षिक विद्यालयीन पाठ्यक्रम सिखाने के पहले उन्हे नैतिकता सहित समस्त शास्वत मूल्यों की शिक्षा की व्यवस्था की जानी चाहिए अन्यथा वर्तमान पाठ्यक्रम बच्चों को सम्पूर्ण मानव कभी नहीं बना सकता जबकि शिक्षा का पहला काम मनुष्य रूप में जन्म लिए शिशु को मनुष्य बनाना है।

संदर्भ सूची

1. ड्यूवी, जान (1959), डेमोक्रेसी एन एजुकेशन न्यूयार्क।
2. रूहेला, एस.पी. (2000) वैल्यू इन माडर्न इण्डियन एजूकेशन थाट्स दिल्ली इण्डियन पब्लिकेशन।
3. भदौरिया, अखिलेश सिंह एवं शुक्ला प्रवीण कुमार (2011), इनक्लूजन ऑफ सत्याग्रह इन माडर्न एजुकेशन, माडर्न एजुकेशनल रिसर्च इन इण्डिया (MERI) सितम्बर व दिसम्बर,2014:26-27(3-4):42-44.
4. कुमार, नागाराव एवं गोरे नाना साहब, (2011) सत्याग्रह : महात्मागांधी का दृष्टिकोण विटाल पब्लिकेशन, इन्द्रपुरी लाल कोठी, जयपुर
5. भदौरिया अखिलेश सिंह (2015) प्रोसीडिंग्स ICSSR स्पोन्सर्ड नेशनल सेमीनार ऑन वैल्यू एजूकेशन फार ह्यूमन डवलपमेन्ट, श्री गॉधी महाविद्यालय सिंघैली, सीतापुर उत्तर प्रदेश, अप्रैल 2–3, 2015, 242–245